The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

लोक व्यवहार में अद्वैत वेदांत: एक दार्शनिक एवं व्यावहारिक अध्ययन

बिपिन कुमार

(शोध छात्र)

डॉ. कृष्ण मुरारी सिंह

(निर्देशक)

सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म.प्र.

ई मेल - mishrabipin261@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21444237

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 18-05-2026

Accepted: 29-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

अद्वैत वेदांत, लोक व्यवहार, आत्मज्ञान, ब्रह्म, समदृष्टि, नैतिकता, निष्काम कर्म, भारतीय दर्शन।

ABSTRACT

भारतीय दर्शन की वेदांत परंपरा में अद्वैत वेदांत का सर्वोच्च स्थान माना जाता है। इसके प्रवर्तक आदि शंकराचार्य ने उपनिषदों, भगवद्गीता तथा ब्रह्मसूत्र के आधार पर यह प्रतिपादित किया कि ब्रह्म ही एकमात्र परम सत्य है तथा जीव और ब्रह्म में कोई वास्तविक भेद नहीं है। सामान्यतः अद्वैत वेदांत को केवल आध्यात्मिक या मोक्ष-केंद्रित दर्शन माना जाता है, किंतु इसके सिद्धांत सामाजिक, नैतिक तथा व्यावहारिक जीवन में भी समान रूप से उपयोगी हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य लोक व्यवहार में अद्वैत वेदांत की भूमिका का दार्शनिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण करना है। यह शोध पत्र गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध-पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों के रूप में उपनिषद, भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र तथा शंकराचार्य के भाष्यों का तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में आधुनिक भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की पुस्तकों एवं शोध-ग्रंथों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अद्वैत वेदांत का आत्मैक्य (Unity of Self) का सिद्धांत सामाजिक समरसता, नैतिकता, करुणा, निष्काम कर्म, सहिष्णुता तथा विश्वबंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करता है। वर्तमान समय में जब समाज

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

जातीय, धार्मिक तथा आर्थिक विभाजनों के संकट से गुजर रहा है, तब अद्वैत वेदांत का "एकत्व" का सिद्धांत मानव समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है [1]।

प्रस्तावना:

भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषता यह है कि उसका उद्देश्य केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवन को श्रेष्ठ, नैतिक तथा आध्यात्मिक बनाना है। भारतीय चिंतन परंपरा में दर्शन और जीवन परस्पर पूरक माने गए हैं। इसी कारण उपनिषदों से लेकर आधुनिक भारतीय चिंतकों तक ने ज्ञान को व्यवहार में उतारने पर विशेष बल दिया है।

भारतीय दर्शन की आस्तिक परंपराओं में वेदांत का सर्वोच्च स्थान है, और वेदांत की विभिन्न शाखाओं—अद्वैत, विशिष्टाद्वैत तथा द्वैत—में अद्वैत वेदांत को सर्वाधिक व्यापक दार्शनिक मान्यता प्राप्त हुई है। अद्वैत वेदांत का मूल प्रतिपादन है कि ब्रह्म ही परम सत्य है तथा जीव और ब्रह्म में कोई वास्तविक भेद नहीं है। यह भेद केवल अविद्या (अज्ञान) के कारण प्रतीत होता है। जब आत्मज्ञान प्राप्त होता है, तब जीव अपनी वास्तविक सत्ता को ब्रह्मस्वरूप के रूप में अनुभव करता है [2]।

अद्वैत वेदांत का दार्शनिक आधार उपनिषदों के महावाक्यों में निहित है। **"अहं ब्रह्मास्मि"** (बृहदारण्यक उपनिषद्), **"तत्त्वमसि"** (छान्दोग्य उपनिषद्), **"प्रज्ञानं ब्रह्म"** (ऐतरेय उपनिषद्) तथा **"अयमात्मा ब्रह्म"** (मांडूक्योपनिषद्) जैसे महावाक्य आत्मा और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन करते हैं। शंकराचार्य ने इन महावाक्यों की व्याख्या करते हुए सिद्ध किया कि समस्त सृष्टि का आधार एक ही चेतना है [3]।

वर्तमान समय में मनुष्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टि से अत्यधिक उन्नत होने के बावजूद सामाजिक असमानता, हिंसा, धार्मिक कट्टरता, पर्यावरणीय संकट, मानसिक तनाव तथा नैतिक पतन जैसी अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है। इन परिस्थितियों में अद्वैत वेदांत का समत्व एवं एकत्व का सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे में अपने ही आत्मस्वरूप का दर्शन करे, तो सामाजिक समरसता, सहिष्णुता और मानवता की भावना का विकास स्वाभाविक रूप से होगा [4]।

इस प्रकार, अद्वैत वेदांत केवल मोक्ष का दर्शन नहीं, बल्कि लोक व्यवहार का भी एक प्रभावी दार्शनिक आधार है। ऐसी स्थिति में अद्वैत वेदांत का अध्ययन न केवल दार्शनिक दृष्टि से बल्कि व्यावहारिक दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इसका समदृष्टि का सिद्धांत सामाजिक समानता, धार्मिक सह-अस्तित्व तथा नैतिक उत्तरदायित्व की स्थापना में सहायक सिद्ध हो सकता है [5]।

शोध उद्देश्य:

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. अद्वैत वेदांत के मूल सिद्धांतों का दार्शनिक विश्लेषण करना।
2. लोक व्यवहार की अवधारणा का विवेचन करना।
3. सामाजिक एवं नैतिक जीवन में अद्वैत वेदांत की भूमिका का अध्ययन करना।
4. आधुनिक समाज में अद्वैत वेदांत की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

अद्वैत वेदांत का दार्शनिक आधार:

अद्वैत वेदांत भारतीय दर्शन की वेदांत परंपरा का सर्वोच्च एवं सर्वाधिक प्रभावशाली दर्शन माना जाता है। "अद्वैत" शब्द का अर्थ है—**द्वैत का अभाव**, अर्थात् सर्वत्र केवल एक की ही सत्ता विद्यमान है।

अद्वैत वेदांत का दार्शनिक आधार **प्रस्थानत्रयी**—उपनिषद, भगवद्गीता तथा ब्रह्मसूत्र—में निहित है। इन ग्रंथों में आत्मा और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन अनेक स्थानों पर किया गया है। विशेष रूप से उपनिषदों के चार महावाक्य अद्वैत दर्शन के आधार स्तंभ माने जाते हैं—

अहं ब्रह्मास्मि (बृहदारण्यक उपनिषद् 1.4.10)
तत्त्वमसि (छान्दोग्य उपनिषद् 6.8.7)
प्रज्ञानं ब्रह्म (ऐतरेय उपनिषद् 3.3)
अयमात्मा ब्रह्म (माण्डूक्य उपनिषद् 2)

इन महावाक्यों का केंद्रीय संदेश यह है कि आत्मा और ब्रह्म में कोई वास्तविक भेद नहीं है। व्यक्ति का वास्तविक स्वरूप शरीर, मन या बुद्धि नहीं, बल्कि शुद्ध चैतन्य है [**6**]।

आदि शंकराचार्य ने *ब्रह्मसूत्र भाष्य* में स्पष्ट किया कि ब्रह्म ही एकमात्र परम सत्य है, जबकि जगत "मिथ्या" है। यहाँ "मिथ्या" का अर्थ "असत्य" नहीं, बल्कि ऐसी सत्ता से है जो अनुभव में तो आती है, परंतु जिसकी स्वतंत्र एवं परम सत्ता नहीं होती। जिस प्रकार स्वप्न जागने पर समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार आत्मज्ञान होने पर संसार की पृथक सत्ता का भ्रम समाप्त हो जाता है [7]।

अविद्या और माया का सिद्धांत:

अद्वैत वेदांत में **अविद्या** को समस्त बंधनों का मूल कारण माना गया है। मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को न जानकर स्वयं को शरीर और मन के साथ जोड़ लेता है। यही अज्ञान अहंकार, राग, द्वेष, मोह तथा भय का कारण बनता है।

शंकराचार्य ने **माया** को ब्रह्म की अनिर्वचनीय शक्ति बताया है, जिसके कारण एक ही ब्रह्म अनेक नाम-रूपों के रूप में प्रतीत होता है। यह माया न पूर्णतः सत्य है और न पूर्णतः असत्य; इसलिए इसे **अनिर्वचनीय** कहा गया है [8]।

मोक्ष की अवधारणा:

अद्वैत वेदांत में मोक्ष का अर्थ किसी अन्य लोक में जाना नहीं है, बल्कि अपने वास्तविक आत्मस्वरूप का प्रत्यक्ष अनुभव करना है। जब आत्मा अपने ब्रह्मस्वरूप का अनुभव करती है, तब जन्म-मरण, सुख-दुःख तथा समस्त द्वैत का अंत हो जाता है। शंकराचार्य के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति केवल **ज्ञान (ज्ञानयोग)** से होती है, कर्म से नहीं। परंतु ज्ञान की पात्रता प्राप्त करने के लिए शुद्ध आचरण, निष्काम कर्म तथा चित्तशुद्धि आवश्यक है। इस प्रकार नैतिक जीवन और आत्मज्ञान परस्पर पूरक हैं [9]।

लोक व्यवहार की अवधारणा:

"लोक व्यवहार" का तात्पर्य व्यक्ति के सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक आचरण से है। परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व के प्रति व्यक्ति का जो उत्तरदायित्व है, उसी की अभिव्यक्ति लोक व्यवहार में होती है।

भारतीय संस्कृति में लोक व्यवहार को केवल सामाजिक शिष्टाचार नहीं माना गया है, बल्कि धर्म का अभिन्न अंग माना गया है। *तैत्तिरीय उपनिषद्* में कहा गया है—

"सत्यं वद। धर्मं चर।"

अर्थात् सत्य बोलो और धर्म का आचरण करो। इससे स्पष्ट होता है कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह व्यवहार में प्रकट हो।

इसी प्रकार *भगवद्गीता* में श्रीकृष्ण अर्जुन को निष्काम भाव से कर्म करने का उपदेश देते हैं—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"
(भगवद्गीता 2.47)

यह श्लोक लोक व्यवहार में कर्तव्य, उत्तरदायित्व तथा निष्काम कर्म की महत्ता को स्थापित करता है।

अद्वैत वेदांत और लोक व्यवहार का संबंध:

कुछ विद्वानों ने अद्वैत वेदांत को केवल संन्यासियों का दर्शन माना है, किंतु यह धारणा पूर्णतः सही नहीं है। शंकराचार्य ने स्वयं **व्यवहारिक सत्य (व्यावहारिक सत्)** और **परमार्थिक सत्य** का भेद स्पष्ट किया है। परमार्थिक दृष्टि से केवल ब्रह्म सत्य है, किंतु व्यवहारिक स्तर पर समाज, परिवार, कर्तव्य, धर्म तथा नैतिकता का पूर्ण महत्व है। जब तक आत्मज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक व्यक्ति को धर्मानुकूल जीवन, सत्य, अहिंसा तथा निष्काम कर्म का पालन करना चाहिए [**10**]।

यही कारण है कि अद्वैत वेदांत लोक व्यवहार से विमुख नहीं करता, बल्कि उसे शुद्ध और उदात्त बनाता है।

समदृष्टि : अद्वैत वेदांत की सामाजिक देन:

अद्वैत वेदांत का सबसे बड़ा सामाजिक योगदान **समदृष्टि** है। *भगवद्गीता* (5.18) में कहा गया है—

"विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥"

अर्थात् ज्ञानी व्यक्ति विद्वान ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते तथा चाण्डाल में समान आत्मा का दर्शन करता है [**11**]।

यह श्लोक सामाजिक समानता, मानव गरिमा तथा धार्मिक सहिष्णुता का अत्यंत महत्वपूर्ण दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है।

राधाकृष्णन के अनुसार अद्वैत वेदांत का वास्तविक उद्देश्य समस्त मानवता को आध्यात्मिक रूप से एक परिवार के रूप में देखना है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** की भावना विकसित हुई।

आधुनिक संदर्भ में अद्वैत वेदांत की प्रासंगिकता:

आज का समाज जातिवाद, सांप्रदायिकता, हिंसा, पर्यावरणीय संकट, मानसिक तनाव तथा नैतिक पतन जैसी अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं का मूल कारण मनुष्य का "मैं" और "तुम" का भेद है।

अद्वैत वेदांत इस भेद को समाप्त कर यह सिखाता है कि समस्त जीवन एक ही चेतना की अभिव्यक्ति है। जब यह दृष्टि विकसित होती है, तब व्यक्ति दूसरों का शोषण नहीं करता, बल्कि सहयोग, सेवा और करुणा का व्यवहार करता है। इसी कारण डॉयच ने अद्वैत वेदांत को केवल भारतीय दर्शन नहीं, बल्कि सार्वभौमिक नैतिक दर्शन (Universal Ethical Philosophy) कहा है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अद्वैत वेदांत का दार्शनिक आधार केवल मोक्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति के दैनिक जीवन, सामाजिक संबंधों तथा नैतिक उत्तरदायित्व को भी गहराई से प्रभावित करता है। इसलिए लोक व्यवहार में अद्वैत वेदांत की उपयोगिता आज के वैश्विक समाज में पहले से अधिक प्रासंगिक है।

समकालीन समाज में जातीय संघर्ष, धार्मिक कट्टरता तथा सामाजिक विभाजन जैसी समस्याओं के समाधान हेतु अद्वैत वेदांत की यह समदृष्टि अत्यंत प्रासंगिक है।

पारिवारिक जीवन में अद्वैत वेदांत:

परिवार सामाजिक जीवन की आधारभूत इकाई है। परिवार में प्रेम, विश्वास, त्याग और सहयोग तभी विकसित होते हैं जब उसके सदस्य परस्पर सम्मान एवं आत्मीयता का व्यवहार करें।

अद्वैत वेदांत व्यक्ति को यह अनुभव कराता है कि प्रत्येक संबंध आत्मा की एकता पर आधारित है। जब परिवार के सदस्य अहंकार और स्वार्थ से ऊपर उठकर एक-दूसरे के सुख-दुःख को अपना मानते हैं, तब पारिवारिक जीवन अधिक संतुलित और सौहार्दपूर्ण बनता है।

आदि शंकराचार्य ने आत्मसंयम (दम), मनोनिग्रह (शम), तितिक्षा तथा श्रद्धा को आत्मज्ञान के लिए आवश्यक गुण माना है। ये गुण पारिवारिक जीवन में सहिष्णुता, धैर्य और क्षमाशीलता का विकास करते हैं [**12**]।

शिक्षा के क्षेत्र में अद्वैत वेदांत:

भारतीय शिक्षा का उद्देश्य सदैव ज्ञान के साथ-साथ व्यक्तित्व एवं चरित्र का निर्माण रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा का अत्यधिक व्यवसायीकरण तथा प्रतियोगितामूलक स्वरूप विद्यार्थियों में तनाव, प्रतिस्पर्धा और आत्मकेंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ा रहा है।

अद्वैत वेदांत विद्यार्थियों में निम्नलिखित मूल्यों का विकास करता है—

- आत्मानुशासन
- आत्मविश्वास
- सहिष्णुता
- नैतिक उत्तरदायित्व
- सेवा-भाव
- विवेक
- आत्मसंयम

राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के भीतर निहित दिव्यता का विकास करना है। यह विचार अद्वैत वेदांत की आत्मैक्य-दृष्टि से पूर्णतः मेल खाता है।

नई शिक्षा नीति (NEP-2020) में भी मूल्यपरक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा समग्र व्यक्तित्व विकास पर विशेष बल दिया गया है। इस दृष्टि से अद्वैत वेदांत की शैक्षिक उपयोगिता और अधिक बढ़ जाती है।

प्रशासन एवं नेतृत्व में अद्वैत वेदांत:

किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की सफलता उसके नैतिक नेतृत्व पर निर्भर करती है। अद्वैत वेदांत का निष्काम कर्म तथा समदृष्टि का सिद्धांत प्रशासनिक जीवन को नैतिक आधार प्रदान करता है।

भगवद्गीता (3.19) में कहा गया है—

"तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।"

अर्थात् आसक्ति का त्याग करके अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए [**13**]।

यदि प्रशासक जाति, धर्म या व्यक्तिगत हित से ऊपर उठकर निष्पक्षता एवं लोककल्याण की भावना से कार्य करें, तो सुशासन(Good Governance) की स्थापना संभव है।

राधाकृष्णन का मत है कि सच्चा नेतृत्व सत्ता का नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम होना चाहिए। यही अद्वैत वेदांत का भी मूल संदेश है।

आर्थिक एवं व्यावसायिक जीवन में अद्वैत वेदांत:

आधुनिक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा और लाभार्जन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। परिणामस्वरूप अनेक बार नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की उपेक्षा होने लगती है।

अद्वैत वेदांत व्यवसाय को केवल धनार्जन का साधन नहीं मानता, बल्कि लोकमंगल का माध्यम भी मानता है। यदि व्यापार में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व को अपनाया जाए, तो आर्थिक विकास अधिक न्यायपूर्ण एवं टिकाऊ हो सकता है।

आज **Corporate Social Responsibility (CSR)** तथा **Business Ethics** जैसी अवधारणाएँ भी इसी प्रकार के नैतिक दृष्टिकोण का समर्थन करती हैं।

पर्यावरणीय दृष्टि से अद्वैत वेदांत:

इक्कीसवीं शताब्दी की सबसे गंभीर समस्याओं में पर्यावरण संकट प्रमुख है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव-विविधता का ह्रास तथा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन मानव अस्तित्व के लिए चुनौती बन चुका है।

अद्वैत वेदांत के अनुसार प्रकृति भी उसी परम ब्रह्म की अभिव्यक्ति है। अतः प्रकृति का संरक्षण केवल पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उत्तरदायित्व भी है।

वैश्विक शांति एवं विश्वबंधुत्व:

वर्तमान समय में विश्व आतंकवाद, युद्ध, नस्लीय संघर्ष तथा धार्मिक कट्टरता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं की जड़ मनुष्य का विभाजनकारी दृष्टिकोण है।

अद्वैत वेदांत सम्पूर्ण मानवता को एक ही चेतना की अभिव्यक्ति मानता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** का आदर्श विकसित हुआ, जो सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की प्रेरणा देता है।

Eliot Deutsch के अनुसार अद्वैत वेदांत आधुनिक विश्व के लिए केवल धार्मिक दर्शन नहीं, बल्कि एक **Universal Philosophy of Human Unity** है [**14**]।

समकालीन संदर्भ में आलोचनात्मक मूल्यांकन:

कुछ विद्वानों का मत है कि अद्वैत वेदांत संसार की अपेक्षा मोक्ष पर अधिक बल देता है और इसलिए सामाजिक सक्रियता को कम महत्व देता है। किंतु यह आलोचना शंकराचार्य के मूल विचारों का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं करती।

शंकराचार्य ने **व्यावहारिक सत्य** और **पारमार्थिक सत्य** के मध्य स्पष्ट भेद स्थापित किया है। व्यावहारिक स्तर पर उन्होंने धर्म, कर्तव्य, यज्ञ, सेवा और लोकसंग्रह की उपेक्षा नहीं की, बल्कि उन्हें चित्तशुद्धि का साधन माना।

अतः अद्वैत वेदांत पलायन का नहीं, बल्कि **आंतरिक आत्मपरिवर्तन के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन** का दर्शन है। यही इसकी सबसे बड़ी व्यावहारिक उपलब्धि है [**15**]।

आत्मकल्याण और लोककल्याण का समन्वय

अद्वैत वेदांत व्यक्ति और समाज को परस्पर विरोधी नहीं मानता। आत्मज्ञान का वास्तविक प्रमाण लोकमंगल की भावना, सेवा, करुणा और न्यायपूर्ण व्यवहार में दिखाई देता है। अतः आत्मकल्याण और लोककल्याण एक-दूसरे के पूरक हैं।

उपसंहार:

अद्वैत वेदांत का मूल प्रतिपादन यह है कि समस्त सृष्टि का आधार एक ही परम सत्य—ब्रह्म—है और प्रत्येक जीव उसी सत्य की अभिव्यक्ति है। इस सिद्धांत का वास्तविक उद्देश्य केवल मोक्ष की प्राप्ति नहीं, बल्कि व्यक्ति के व्यवहार, नैतिकता और सामाजिक चेतना का परिष्कार भी है।

स्पष्टत: अद्वैत वेदांत लोक व्यवहार के विविध आयामों—पारिवारिक जीवन, सामाजिक समरसता, शिक्षा, प्रशासन, आर्थिक नैतिकता, पर्यावरण संरक्षण और विश्वबंधुत्व—को गहराई से प्रभावित करता है। आत्मैक्य की भावना व्यक्ति को अहंकार, स्वार्थ, हिंसा और भेदभाव से मुक्त कर सेवा, सहयोग और सह-अस्तित्व की दिशा में प्रेरित करती है।

समकालीन समाज में बढ़ती धार्मिक असहिष्णुता, जातीय संघर्ष, नैतिक अवमूल्यन तथा मानसिक तनाव जैसी चुनौतियों के बीच अद्वैत वेदांत का "एकत्व" का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। यह दर्शन केवल दार्शनिक चिंतन नहीं, बल्कि व्यावहारिक जीवन-पद्धति है, जो व्यक्ति को आत्मानुशासन, निष्काम कर्म और लोककल्याण की ओर उन्मुख करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि **लोक व्यवहार में अद्वैत वेदांत केवल आध्यात्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक, नैतिक एवं मानवीय जीवन-दृष्टि है** ।

संदर्भ सूची:

1. डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन, 1923; इंडियन फिलासफी, Volume 1. London G: Allen and Urwin Ltd , New York.
2. शंकराचार्य: ब्रह्मसूत्र भाष्य (trans. Swami Gambhirannand) 1965; अद्वैत आश्रम
3. डॉ राधाकृष्णन 1953, द प्रिंसिपल उपनिषद्; हार्पर कॉलिंस एंड ह्यूमैनिटी बुक्स.
4. Deutsch, 1969; अद्वैत वेदांत: अ फिलोसॉफिकल रिकंस्ट्रक्शन; University of Hawaii Press.
5. Hiriyanna M. 1932, Outlines of Indian Philosophy (George Allen and Urwin)
6. डॉ राधाकृष्णन, 1953; इंडियन फिलासफी Volume 2.
7. शंकराचार्य: ब्रह्मसूत्र भाष्य (trans. Swami Gambhirannand), 1965; अद्वैत आश्रम
8. Deutsch, 1969; अद्वैत वेदांत: अ फिलोसॉफिकल रिकंस्ट्रक्शन; University of Hawaii Press.
9. Sharma C. 1962; ए क्रिटिकल सर्वे ऑफ इंडियन फिलासफी: मोतीलाल बनारसीदास

10. शंकराचार्य: ब्रह्मसूत्र भाष्य (trans. Swami Gambhirannand), 1965; अद्वैत आश्रम

11. श्रीमद्भगवद्गीता: अध्याय 5 श्लोक 18. गीताप्रेस, गोरखपुर

12. शंकराचार्य: ब्रह्मसूत्र भाष्य (trans. Swami Gambhirannand), 1965; अद्वैत आश्रम

13. श्रीमद्भगवद्गीता: अध्याय 3 श्लोक 19. गीताप्रेस, गोरखपुर

14. Deutsch, 1969; अद्वैत वेदांत: फिलोसॉफिकल रिकंस्ट्रक्शन; University of Hawaii Press

15. शंकराचार्य: गीताभाष्य ; गीताप्रेस, गोरखपुर